बिली का सुपर-केक





बड़ा आश्चर्य

"बिली ज़रा अपने कमरे की हालत देखो!
आज मैं नई झाड़ू लेकर
तुम्हारा कमरा साफ़ करूंगी.
मैं यहाँ का सब कबाड़ साफ़ करूंगी."



"कौन सा कबाड़, माँ?
यहाँ सब कुछ मेरा अपना है.
मुझे यहाँ कुछ भी कबाड़ नहीं दिख रहा.
माँ, आप अपनी झाड़ू यहाँ से वापिस ले जाएँ."

"क्या कह रहे हो! यहाँ तो कचरा ही भरा है?
अब मैं यहाँ का सब कबाड़ साफ़ करूंगी."





"नहीं माँ! कृपाकर इसे यहीं रहने दें.
मुझे इसकी ज़रुरत है! यह सब मेरा है.
मैं कुछ बना रहा हूँ, इसलिए मुझे इसकी ज़रुरत है.
माँ! इस सामान को यहाँ से नहीं उठायें.
जो आपको दिख रहा है वो सब मेरे काम का है."



"यह क्या है?
और वो क्या है?
इस सभी कचरे को फेंकना चाहिए."





“नहीं! नहीं माँ!
मुझे इस सामान की सख्त ज़रुरत है.
मुझे इनसे कुछ नया बनाऊंगा.
माँ! मैं अभी आपको बताना नहीं चाहता
कि मैं इस सबसे क्या नई चीज़ बनाऊँगा.
आप यहाँ से जाएँ. मुझे अपना काम करने दें.
हाँ, साथ में अपनी नई झाड़ू ज़रूर लेती जाएँ.
कृपा मेरे कमरे को साफ़ करने का कष्ट न करें.”





"अच्छा यह क्या है?
और वो क्या है?
इस कचरे को मुझे फेंकना ही पड़ेगा!"

"नहीं माँ! इसे नहीं फेंकें!
मुझे नई चीज़ बनाने के लिए
इस सबकी ज़रुरत पड़ेगी!"

“चलो ठीक है! ठीक है!
पर इस कचरे को मेरी नज़रों से दूर रखो.
अच्छा, इनमें से मैं यह तो मैं फेंक ही सकती हूँ.”





“नहीं माँ! कृपा करके इसे बिल्कुल न फेंकें!
यह चीज़ मेरे लिए बहुत काम की है.
इसे मुझे वापिस दें.
जो मैं बना रहा हूँ उसमें मुझे
इन सब चीज़ों की ज़रुरत पड़ेगी.
आप यहाँ से कोई भी चीज़ नहीं लें.
यह सभी चीज़ें मेरी हैं.
कृपा करके मेरी सभी चीज़ों को यहीं रहने दें.”



"बिली, तुम बिल्कुल
बेकार की बातें कर रहे हो.
तुम बार-बार यही कह रहे हो –
यह मत फेंको! वो मत फेंको!
पर कबाड़ को तो आखिर फेंकना ही पड़ेगा."



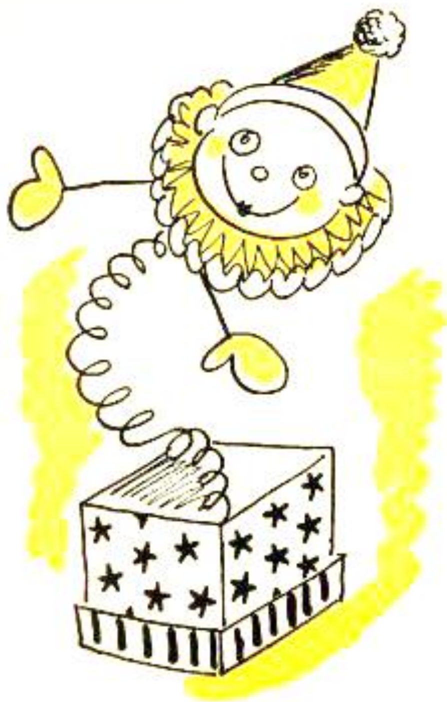
"देखो, कम-से-कम इसे तो फेंका ही जा सकता है."
"नहीं माँ! यह चीज़ तो मेरे बेहद काम की है!
आप इस बिल्कुल न फेंकें!"



“कृपा करें माँ! मुझे मेरे हाल पर छोड़ दें.
यहाँ जो कुछ भी दिख रहा है, मुझे वो सब चाहिए.
माँ, आप अपनी झाड़ू साथ में ज़रूर लेती जाएँ.
और भगवान के लिए मेरे कमरे को साफ़ न करें.”



"चलो मैं सिर्फ एक फालतू की चीज़ ले जाती हूँ,
बाकी चीज़ें तुम्हारे लिए छोड़ जाती हूँ."





"माँ, आप बिल्कुल समझ नहीं रही हैं.
मैं एक बिल्कुल नायाब चीज़ बना रहा हूँ.
उसके लिए मुझे हर सामान लगेगा.
नहीं तो मेरा प्रोजेक्ट अधूरा रहेगा."





“अच्छा, फिर बताओ कि तुम क्या बना रहे हो?
इस कचरे से तुम क्या अचार बना रहे हो?”

“नहीं, मैं इनका अचार नहीं बना रहा हूँ.
मैं आपके लिए कुछ नया बना रहा हूँ.”

“मैं क्या बना रहा हूँ? वो अभी बता नहीं सकता.
यह रहस्य है, जिसे मैं अभी नहीं खोल सकता.
कृपा आप जाएँ. यहाँ से तुरंत चली जाएँ.
फिर जब मैं कहूं, तभी दुबारा वापिस आयें.
तब आप देखेंगी और सारी बात समझेंगी.
मेरा प्रोजेक्ट देखकर आप नहीं झिड़केंगी.”

ठीक है माँ!







सुपर केक



“बिली, भगवान के लिए यह तो बताओ

कि तुम अब क्या बनाना चाहते हो!”



“माँ! समझने की कोशिश करें.

मैं आपके लिए एक महान उपहार बनाऊंगा.

मैं इस किताब में पढ़कर आपके जन्मदिन के लिए

दुनिया का सबसे सुपर-केक बनाना बनाऊँगा.”

“क्या केक?

तुमने आजतक कभी कोई केक नहीं बनाया है.

तुम्हें केक बनाना नहीं आता है.

यह पागलपन बंद करो.”

“मुझ पर रहम करें! मुझे सुपर-केक बनाने दें.
इस किताब में उसके बनाने का तरीका दिया है.
माँ! अब आप जाएँ. मुझे मेरा काम करने दें.
मैं अच्छा केक बनाऊँगा! मुझे दोष न दें!”



अच्छा! तीन अंडे.
मैं बड़े केक के लिए बीस अंडे इस्तेमाल करूंगा!





अब मैं केक में कुछ यह डालूँगा.
और कुछ वो डालूँगा.



नहीं! नहीं!
मैं उसमें बिल्ली नहीं मिलाऊँगा!

किताब में “दूध” लिखा है.
मैं उसमें बहुत सारा दूध डालूँगा.
क्यूंकि माँ को चाय अच्छी लगती है.
इसलिए में उसमें केतली भी डालूँगा.

माँ को जो कुछ अच्छा लगता है.
उसे मैं सुपर-केक में डालूँगा.
माँ को मीठा बहुत पसंद है,
इसलिए मैं डिब्बा भर चीनी डालूँगा.







क्यूंकि माँ को जैम पसंद है
इसलिए मैं कुछ जैम भी मिलाऊँगा.

क्यूंकि माँ को मीट पसंद है
इसलिए कुछ मीट भी मिलाऊँगा.

बेकिंग सोडा तो बहुत ज़रूरी है.
उसका मैं पूरा डिब्बा डालूँगा.





बिल्ली! तुम दूर रहो!
इस परात के अन्दर मत कूदो!
माँ तुम्हें चाहती ज़रूर हैं,
पर जन्मदिन के केक के अन्दर नहीं!





इस कुक-बुक से अब
और मदद नहीं मिलेगी.
मैं केक में वो सभी चीज़ें मिलाऊँगा
जो माँ को बेहद पसंद हैं!

माँ को अचार पसंद है,
पॉपकॉर्न भी!
पर यह क्या है?
गोंद! नहीं! नहीं!



देखो यह रही कुछ मछली.
और साथ में कुछ मीट.



यह रही जेली,
लाल और पीली!



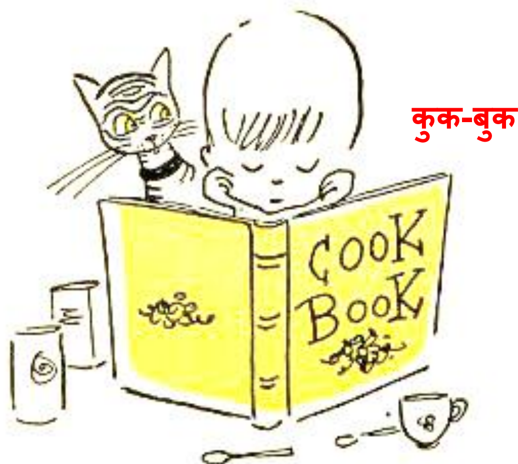
यह रहे सरसों के बीज,

कस्टर्ड, जिससे दिल जाए पसीज.

यह सब चीज़ें माँ को हैं बेहद पसंद.

लगता है माँ, अंत में मेरी बात को समझेंगी

मेरे सपनों के प्रोजेक्ट के मर्म को समझेंगी.



कुक-बुक में लिखा है,
मिक्सचर को खूब फेंटो.
तुम्हीं बताओ –
मैं उसे कैसे हिलाऊँ?

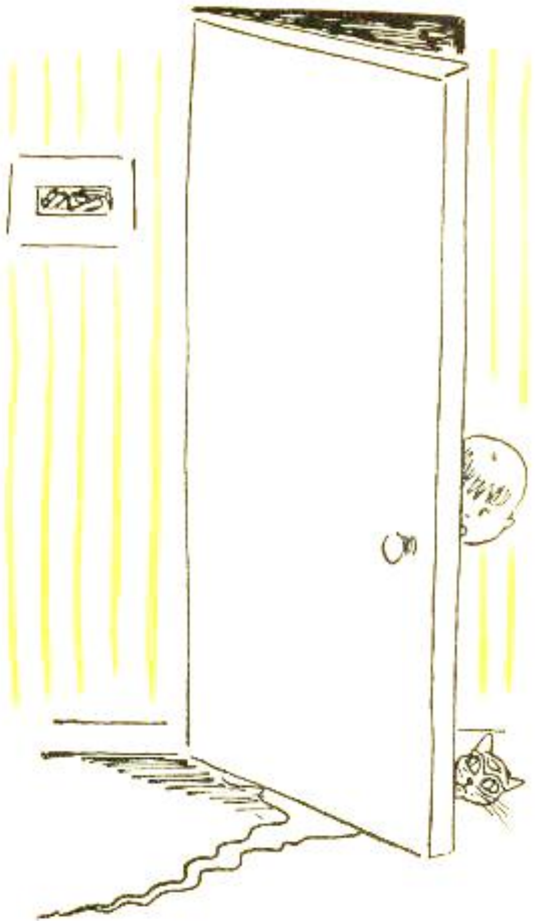


परात के सब सामान को मैं झाड़ू से मिलाऊँगा.
माँ तब तक कमरे में नहीं आयेंगी.
जब तक मैं उन्हें नहीं बुलाऊँगा.



“अच्छा, बिली बताओ, तुमने क्या बनाया?”
“रुको माँ! रुको! अभी नहीं है पकाया.
माँ, कुछ और इंतज़ार करो, यहाँ से जाओ.
मेरे इशारे के बाद ही कमरे में वापिस आओ.

तब तुम देखोगी और समझोगी
मेरे बड़े प्रोजेक्ट को शाबाशी दोगी.





अब मुझे लगता है कि केक को निकालना चाहिए
क्यूंकि वो पक चुका है, उसे थोड़ा चखना चाहिए.

केक देखने में बड़ा मस्त लग रहा है.
शायद माँ को भी खाने में मज़ा आएगा.
खाने में वो बहुत स्वादिष्ट बना होगा.





यह करने से सबको यह लगेगा कि वो साधारण केक नहीं, जन्मदिन का केक है. एकदम उम्दा और लज़ीज़ केक है.



“अच्छा बिली बताओ! तुम क्या पका रहे हो? तुम किस किस्म का केक बना रहे हो?”





“अभी रुको! कुछ काम अभी बाकी है.
केक का काम अभी अधूरा है.
कृपाकर यहाँ से जाओ. जल्दी से जाओ.
जब मैं बुलाऊँ तभी वापिस आओ.
तब तुम देखोगी और समझोगी
मेरे सुपर-केक को शाबाशी दोगी.”

अच्छा माँ!

अन्दर आओ!



जन्मदिन की
शुभकामनाएं!



“बिली! तुमने कितना उम्दा केक बनाया!
उसे देखकर दिल फूला नहीं समाया!
मैं वाकई में एक खुशनसीब माँ हूँ!”



“मैं पूरी ज़िन्दगी इस केक को संजोकर रखूंगी.
जिससे तुम्हें दुबारा कभी दूसरा केक नहीं बनाना पड़े!”

अंत